आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:17-09-14

सर्व-शास्त्र शिरोमणि गीता का एक मन्त्र का सही अर्थ समझाकर, हम बच्चों को मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बतलाने वाले, गीता ज्ञान दांता, परमपिता-परमात्मा शिव ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - माया को वश करने का मन्त्र है मनमनाभव, इसी मन्त्र में सब खूबियां समाई हुई हैं, यही मन्त्र तुम्हें पवित्र बना देता है.

बाबा ने हमें मनमनाभव का सही अर्थ समझाया है - अपने को आत्मा समझ, मुझ परमात्मा-बाप को याद करों तो तुम्हारे सब पाप भस्म हो जायेंगे और आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगी. मनमनाभव को ही याद की यात्रा कहा जाता हैं.

आज सारी मुरली में बाबा ने मनमनाभव के महामन्त्र के महत्व को समझाया है और उसके फायदे बताये है. उसे एक बार लिखकर याद करेंगे.

- बाबा कहते है - याद की यात्रा से तुम बहुत-बहुत सेफ रहते हो. मूल बात ही बच्चों के लिए यह है. जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेंगी (खुद दुखी नहीं होंगे) और कैरेक्टर्स भी सुधरते जायेंगे (औरो को भी दुखी नहीं करेंगे). खुद को आत्मा समझने का पुरुषार्थ करने से ६३ जन्मो से रहा यह देह-अभिमान भी उतरता जायेगा.

- बाबा कहते है - इस मन्त्र को युज कर, तुम स्वयं को विदेही समझकर मुझ विदेही बाप को याद करते हो. इसे माया भी वश हो जाती है और तुम्हारी आत्मा भी पवित्र बन जाती हैं.

- बाबा कहते है - जो आत्माये इस समय मनमनाभव के महामन्त्र को धारण करती है वह स्वर्ग में भी ऊंच पद प्राप्त करती हैं.

- बाबा कहते है - तुम बच्चे याद की यात्रा में रहकर, जब किसी को ज्ञान सुनाते हो तो ही उस आत्मा को भी ज्ञान का तीर लगेगा. इसे ही दूसरे शब्दों में कहा जाता है, ज्ञान की तलवार में याद का जौहर चाहिए तभी सुनने वाले को भी अनुभव करा पायेंगे और अनुभव के आधार पर ही वह आत्मा बाबा की बन जायेंगी.

- बाबा कहते है - तुम जितना-जितना याद में रहेंगे, उसे तुम्हारा स्वभाव भी बहुत मीठा बनता जायेगा और वाणी में मधुरता आती जायेगी. सतयुग में देवी-देवताये सब मीठे स्वभाव के होते हैं.

- बाबा कहते है - याद की यात्रा से ही तुम्हारी आत्मा की बैटरी चार्ज होती है यानी आत्मा में ताकत आती हैं. आत्मा में ताकत आने से ईश्वरीय ज्ञान को सरल रूप से धारण कर सकेंगे. सारे कल्प में पार्ट बजाने के लिए तुम्हारी आत्मा अभी ही, संगमयुग पर ही याद की यात्रा पर रहकर ताकत भरती है.

- बाबा कहते है - याद की यात्रा से ही तुम्हारी कर्मेन्द्रियां सब शांत हो जाती हैं.

अभी संगमयुग का बहुत थोड़ा सा समय हमारे पास बचा है तो बाकी रहे हुए समय को सफल करने के लिए हमारे हर श्वास में बाबा की याद समाई हो.

बाबा मेरे साथ हैं, बाबा मेरे पास हैं.

ॐ शांति.